

कार्यालय ज्ञान

उत्तराखण्ड राज्य में सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु निदेशक, सैनिक कल्याण के पत्र संख्या 4008/सैनिक/से.वि.गृ/प्रस्ताव/राजि दिनांक 21 जून, 2006 के द्वारा प्रेषित प्रस्तावों पर सैन्यक विद्यारोपरांत निम्नलिखित प्रक्रिया निर्धारित की जाती है:-

क्रमांक	विषय	प्रक्रिया
1	उद्देश्य	सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण का मुख्य उद्देश्य पूर्व/समान्य सैनिकों तथा उनके आश्रितों को निर्धारित सन्तुल्यता के लिए न्यूनतम दर पर आवास उपलब्ध कराना। उपलब्धता की स्थिति में इन विश्राम गृहों का सामान्य नागरिकों को भी अधिवास हेतु उपलब्ध कराया जा सकेगा। इस संबंध में भारत सरकार एवं रक्षा मंत्रालय के सुसंगत दिशा-निर्देशों का भी अनुपालन किया जाएगा, ताकि भारत सरकार से 60 प्रतिशत का कन्ट्राइ भी प्राप्त किया जा सके।
2	सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु प्राथमिकताएं	पूर्व सैनिक एवं उनके आश्रित प्रायः जिला सैनिक कल्याण कार्यालयों एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों में जन्मी विभिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु दूर-दराज के क्षेत्रों से आते हैं। प्रदेश की भौगोलिक परिस्थितियों तथा आवागमन के पर्याप्त साधन न होने के कारण उन्हें अपने कार्य पूर्ण होने की स्थिति में राज्य विश्राम हेतु विभिन्न हाटलों एवं धर्मशालाओं में ठहरना पड़ता है, जिस पर अनुविधा के व्यतिरिक्त उन्हें काफी धनराशि खर्च करनी पड़ती है। विश्राम गृहों के निर्माण हेतु स्थलों का चुनाव जहाँ जन्म जन्म से स्थान प्रस्तावित/चिन्हित कर लिए जायेंगे जहाँ पर पूर्व/समान्य सैनिकों व उनके आश्रितों (उपलब्धता के आधार पर सामान्य नागरिकों हेतु भी) के लिये विश्राम गृह का उपयोग किया जाना सुगम एवं पहुँच में हो। सनस्त-जिला मुख्यालयों में सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण किया जायेगा। तहसील एवं ब्लॉक मुख्यालयों के ऐसे स्थलों में जहाँ यात्रा करना सुगम हो, में सौम्य प्रसन्न उपलब्ध कराते समय ऐसे स्थलों को प्राथमिकता दी जायेगी जहाँ पर पूर्व सैनिकों की अधिकता एवं आवश्यकता भी हो। उपरोक्त तथ्यों को मध्यनजर रखते हुये राज्य स्तरीय जिला स्तरीय एवं तहसील स्तर पर सैनिक गृहों का निर्माण किया जायेगा। शान्तनवीर संख्या-33/XXII(2)/2008-29 (सं0क0)/2002 दिनांक 22 जनवरी 2008 द्वारा यह निर्णय लिया जा चुका है कि उपलब्धता की स्थिति में विश्राम गृहों को सामान्य पर्यटकों को भी उपलब्ध कराया जायेगा। अतः विश्राम गृह निर्माण की नीति निर्धारण के समय इस तथ्य पर भी विचार किया

		<p>जाता होगा। यदि विश्राम गृहों का निर्माण आवश्यकता अनुसार न हो सके तो इसे एक अन्य पर्याप्त क्षमता के लिए आवेदन करके किया जायेगा। वहीं दूसरी ओर पूर्व निर्मित एवं इनसे क्षमता का अभाव करने में सक्षमता के साथ उपलब्ध होगा।</p>
3	सैनिक विश्राम गृहों की क्षमता	<p>राज्य में राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय, तहसील एवं ब्लॉक स्तरीय सैनिक विश्राम गृहों की स्थापना की जायेगी। सैनिक विश्राम गृहों की उपयोगिता एवं सुविधा के दृष्टिकोण से अंग्रेजी (A.D.) में विभक्त किया जायेगा। तहसील/ब्लॉक स्तर पर सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण वहीं पर पूर्व निर्मित एवं इनसे क्षमता की उपलब्धता के अभाव में निर्धारित रूप दिया जाना चाहिए। इनके साथ ही उस क्षेत्र में इसकी उपयोगिता के साथ-साथ पर्याप्त के अंत में सुविधा/उपयोगिता का भी ध्यान में रखा जायेगा। जनसंख्या वृद्धि के अतिरिक्त अन्य जनसंख्या एवं महत्वपूर्ण स्थलों यथा हरिद्वार, नैनीताल, ऋषिकेश एवं धार धाम स्थलों इत्यादि में राज्य स्तरीय सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण किया जा सकेगा। इसके लिए नये स्थलों पर राज्य स्तरीय विश्राम गृहों की स्थापना के लिए स्थान विशेष की आवश्यकता, उक्त स्थानों पर पूर्व उपलब्ध अन्य सरकारी विश्राम गृहों के संचालन को वर्तमान प्रारंभिक, उक्त हेतु स्थान अधिन के साथ साथ यदि किसी जनपद में जिला स्तरीय विश्राम गृह स्थापित है तो उस यथा आवश्यकता उच्चोक्त भी दिया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार जिला स्तरीय, तहसील स्तरीय एवं ब्लॉक स्तर पर भी सैनिक विश्राम गृहों का निर्माण किया जायेगा।</p>
4	भूमि की उपलब्धता	<p>समस्त जिलाधिकारियों के माध्यम से उपयुक्त भूमि चयन कर प्रस्ताव निदेशालय, सैनिक कल्याण के माध्यम से राज्य को उपलब्ध कराया जायेगा। उपयुक्त भूमि का आवास एवं वृक्षों के चयनित स्थल सुगम व कार्यस्थल/मुख्यालय/क्षेत्र विभाग की पहुंच में हो जिससे कि उत्तम पूर्ण संपुर्ण हो सके। राज्य स्तरीय, जिला स्तरीय, तहसील एवं ब्लॉक स्तरीय सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु निर्दिष्ट भूमि को सीना इसलिए निर्धारित नहीं की जा रही है कि कतिपय स्थलों पर भूमि की उपलब्धता का देखते हुये जिला सैनिक कल्याण कार्यालय/निदेशालय, सैनिक कल्याण द्वारा आवश्यकतानुसार उपयुक्त भूमि चयनित कर प्रस्ताव शासन को उपलब्ध कराया जायेगा।</p>
5	वित्तीय मानक/मानदण्ड	<p>चूंकि राज्य में विषम भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं तथा पर्याप्त एवं मैदानी जनपदों में निर्माण लागत एक समान नहीं रहती। अतः राज्य के सैनिक विश्राम गृहों के निर्माण हेतु निर्दिष्ट धनराशि का निर्धारण नहीं किया जा रहा है। वित्तीय मानक व मानदण्ड के संबंध में विभिन्न क्षेत्रों (राज्य/जिला/तहसील/ब्लॉक स्तरों) के लिए उपयोगिता तथा क्षेत्र विभाग की आवश्यकता के आधार पर निर्माण प्रस्ताव (कच्ची की संख्या तथा प्रकार के आधार पर) निर्धारित किया जाएगा, भूमि की उपलब्धता एवं अन्य मानदण्डों</p>

		का वक़्त हुए सैनिक शिक्षण गृहों के निर्माण का आगमन प्रत्यक्ष निदेशालय द्वारा उपराष्ट्रिय करारा जारिया किया जायेगा, जिसे शासन को एक गठित तकनीकी विभाग (सी०ए०सी०-डिन०) के परीक्षणानुसार नियमानुसार स्वीकृति प्रदान की जायेगी। सैनिक शिक्षण गृहों में उपराष्ट्रिय सुविधाओं की दृष्टिगत उनका जितना निर्धारित किया जायेगा।
६.	शिक्षण गृहों का प्रबंधन	शिक्षण गृहों का प्रबंधन Public Private Partnership मॉडल से करार का प्रयास किया जायेगा, जिससे इसका प्रशासनिक व्यय घटने में आए। इसके अतिरिक्त इन शिक्षण गृहों के प्रबंधन हेतु अतिरिक्त पदों का सृजित करने पर विचार नहीं किया जायेगा।
७.	कार्ययोजना	निदेशालय द्वारा सैनिक शिक्षण गृहों के समग्र ऋण निर्माण हेतु एक कार्ययोजना (Action Plan) तैयार की जायेगी, जिसमें शिक्षण गृहों के स्थापना एवं संचालन संबंधी जल्द सार्वजनिक प्रारम्भ करने हेतु एक निश्चित समय-सीमा निर्धारित की जायेगी तथा उसका कड़ाई से अनुपालन सुनिश्चित किया जायेगा।
८.	अन्य	उपराष्ट्रिय के अतिरिक्त सैनिक शिक्षण गृहों के निर्माण हेतु भारत सरकार के विभिन्न दिशा-निर्देशों/सुलगत नियमों तद्विषयक अन्य नानों/मापदण्डों का भी अनुपालन किया जायेगा।

2. उक्तानुसार प्रक्रिया निर्धारण संबंधी शासन के पूर्व कार्यालय ज्ञाप संख्या- 537 /XVII(2) /2008-48(सी०क०)/2003 दिनांक 10 सितम्बर, 2008 को निरस्त कर दी जायेगी।

3. यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय पत्र संख्या-354(P)/XXVII-3/2008 दिनांक 18 अक्टूबर, 2008 में प्राप्त उनकी सहमति के क्रम में जारी किए जा रहे हैं।

भवदीय

(राधा रतूड़ी)  
सचिव।

मुद्रांकन संख्या:- 610 /XVII-3/2008-48(सी०क०)/2003।

प्रतिलिपि- निम्नलिखित को सूचना एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित-

1. प्रमुख सचिव, मा० मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड शासन।
2. निर्ज संवि, मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
3. आयुक्त गढ़वाल एवं कुमाऊँ नडल, उत्तराखण्ड।
4. समस्त जिलाधिकारी, उत्तराखण्ड।
5. निदेशक, सैनिक कल्याण एवं पुनर्वास, उत्तराखण्ड, देहरादून।
6. समस्त जिला सैनिक कल्याण अधिकारी, उत्तराखण्ड।
7. आदेश प्रजिका।

आज्ञा के

(राधा रतूड़ी)  
सचिव